आयुष सर्वेक्षण
पर
प्रेस नोट
जुलाई 2022 से जून 2023

राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय
सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय
भारत सरकार

भारत सरकार

सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय

ज्येष्ठ, शक संवत 1946

13 जून, 2024

प्रेस नोट

आयुष सर्वेक्षण का परिणाम

मुख्य निष्कर्ष

- लगभग 95%. ग्रामीण और 96% शहरी प्रत्यर्थी आयुष के प्रति जागरूक हैं।
- लगभग 85% ग्रामीण और 86% शहरी परिवारों में कम से कम एक सदस्य औषधीय पौधों/घरेलू उपचारों/स्थानीय स्वास्थ्य परंपरा/लोक दवाइयों के प्रति जागरुक है ।
- लगभग 46% ग्रामीण और 53% शहरी व्यक्तियों ने पिछले 365 दिनों में बीमारी के निवारण एवं उपचार के लिए आयुष का प्रयोग किया।
- आयुर्वेद इलाज के लिए ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में सबसे अधिक प्रयोग की जाने वाली प्रणाली है।
- आयुष मुख्यतः कायाकल्प और निवारक उपायों के लिए प्रयोग किया जाता है।

क. भूमिका

'आयुष' पर पहला विशिष्ट अखिल भारतीय सर्वेक्षण का आयोजन जुलाई 2022 से जून 2023 तक राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय (एनएसएसओ) द्वारा राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण (एनएसएस) के 79 वें दौर के भाग के रूप में किया गया। यह सर्वेक्षण अंडमान एवं निकोबर द्वीप समूह में कुछ दुर्गम गांवों को छोड़कर पूरे भारतीय संघ को सम्मिलित करता है। 1,81,298 परिवारों से जानकारी एकत्रित की गई जिसमें ग्रामीण क्षेत्र के 1,04,195 और शहरी क्षेत्र के 77,103 परिवार शामिल हैं।

सर्वेक्षण का व्यापक उद्देश्य निम्नलिखित पर जानकारी एकत्र करनी थी:

- ✓ स्वास्थ्य रक्षा की पारंपरिक प्रणाली के बारे में लोगों की जागरूकता (औषधियों की आयुष प्रणाली),
- ✓ बीमारी के निवारण और उपचार के लिए आयुष का प्रयोग,
- ✓ घरेलू उपचार, औषधीय पौधों, स्थानीय स्वास्थ्य परंपरा/लोक दवाइयों के बारे में परिवारों की जागरुकता ।

इसके अतिरिक्त, सर्वेक्षण ने आयुष औषधि प्रणाली का प्रयोग करते हुए इलाज के लिए घरेलू व्यय पर जानकारी एकत्रित की। परिणाम (यूनिट लेवल डाटा के साथ फैक्टशीट) मंत्रालय की वेबसाइट ([www.mospi.gov.in] (http:// www.mospi.gov.in)) पर उपलब्ध है।

ख. प्रतिदर्श डिजाइन

एक स्तरीकृत बहु-चरण प्रतिदर्श डिजाइन आयुष सर्वेक्षण में प्रयोग किया गया था, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में गांव और शहरी क्षेत्रों में शहरी रूपरेखा सर्वेक्षण (यूएफएस) ब्लॉक या गावों की उप-इकाई या यूएफएस ब्लॉक प्रथम चरण इकाई (एफएसयू) के रूप में माना जाता है। दोनों क्षेत्रों में अंतिम चरण इकाई (यूएसयू) घरेलू थी। प्रतिस्थापन के बिना सरल यादच्छिक नमूनाकरण (एसआरएसडब्ल्यूओआर) का प्रयोग एफएसयू के चयन तथा चुने गए एफएसयू के घरों के लिए किया गया था।

ग. संकल्पनात्मक रूपरेखा

सर्वेक्षण के उद्देश्य के लिए आयुष के प्रति 'जागरूकता' और 'प्रयोग' को नीचे वर्णित तरीके से परिभाषित किया गया है:

यदि निम्नलिखित में से एक या एक से अधिक कथन पूरे होते हैं तो 15 वर्ष या उससे अधिक आयु के परिवार के एक सदस्य को "आयुष के प्रति जागरूक" के रूप में माना गया है:

(i) यदि उसने नुस्खे के साथ या बिना किसी समय औषधि की आयुष प्रणाली का उपयोग करते हुए इलाज कराया है।

(ii) यदि उसने किसी भी आयुष प्रणाली नामतः आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा, सोवा- रिग्पा/आमची, होम्योपैथी के बारे में परिवार, मित्र, चिकित्सा अधिकारी, मीडिया (आउटरीच कैंप, संगठनों के सर्वेक्षण, इत्यादि के माध्यम से टीवी, रेडियो, होर्डिंगस, समाचार पत्र और पत्रिका, इंटरनेट - फेसबुक/व्हाट्स एप/ट्विटर/आईईसी) शोध आलेख/चिकित्सा समाचार-पत्र/पाठ्य पुस्तक आदि से सुना हो ।

(iii) यदि वह उपचार या निवारण के लिए औषधीय पौधों, औषधीय महत्व वाले पौधे, घरेलू उपचार या पारंपरिक अभ्यास/लोक अभ्यास के बारे में जागरूक है/था।

(iv) यदि वह किसी भी आयुष स्वास्थ्य सेवा केन्द्र/सेवा प्रदाता से पेशेवर रूप से निम्न में से किसी एक श्रेणी के अंतर्गत जुड़ा हुआ/जुड़ी हुई है: पंजीकृत स्वास्थ्य कर्मी, अपंजीकृत स्वास्थ्य कर्मी, दाई, मालिशिया, फार्मासिस्ट, योग प्रशिक्षक, पंचकर्म चिकित्सक, कपिंग चिकित्सक आदि अथवा आयुष औषधियों के उत्पादन/विनिर्माण में संलग्न व्यक्ति।

'आयुष चिकित्सा पद्धति का उपयोग' से तात्पर्य रोग के निदान/उपचार अथवा रोग की रोकथाम हेतु किसी चिकित्सक के परामर्श पर एक या एक से अधिक आयुष चिकित्सा पद्धतियों के उपयोग/अपनाने से है, यथा आयुर्वेद, योग, यूनानी, सिद्ध, सोवा-रिग्पा और होम्योपैथी। इसमें घर के किसी चिकित्सा ज्ञान समृद्ध सदस्य सुझाए गए उपचार/उपाय/स्वयंचिकित्सा आदि भी शामिल शामिल होंगे।

घ. सर्वेक्षण के प्रमुख परिणाम:

1. आयुष के प्रति जागरूकता:

ग्रामीण भारत में 15 वर्ष या उससे अधिक आयु के लगभग 95% पुरुष और महिलाएँ आयुष के बारे में जानते थे जबकि शहरी क्षेत्रों में यह आंकड़ा 96% के आसपास है। चित्र 1 में अखिल भारतीय स्तर पर आयुष व्यवस्था की जानकारी रखने वाले व्यक्तियों (15 वर्ष अथवा इससे अधिक आयु) का लिंगवार अनुमान दिया गया है।

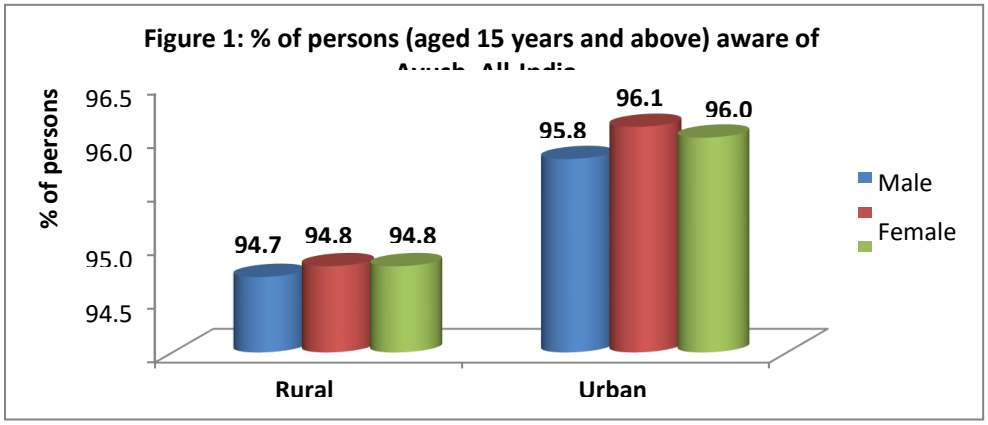

ग्रामीण भारत में लगभग 79% परिवारों और शहरी भारत में लगभग 80% परिवारों में कम से कम एक सदस्य ऐसा है जो औषधीय पौधों तथा गृहचिकित्सा की जानकारी रखता है जबकि ग्रामीण एवं शहरी दोनों ही क्षेत्रों में लगभग 24% घरों में कम से कम एक ऐसा सदस्य है जो लोक औषधि अथवा लोक चिकित्सा पद्धतियों की जानकारी रखता है।

2. आयुष का उपयोग:

पिछले 365 दिनों के दौरान रोगों की रोकथाम एवं उपचार हेतु आयुष का उपयोग ग्रामीण क्षेत्रों की बजाए शहरी क्षेत्रों में अधिक देखा गया है। नीचे दी गई आकृति 2 में ऐसे व्यक्तियों का प्रतिशत दर्शाया गया है जिन्होंने पिछले 365 दिनों के दौरान रोग की रोकथाम अथवा उपचार के लिए आयुष का उपयोग किया है।

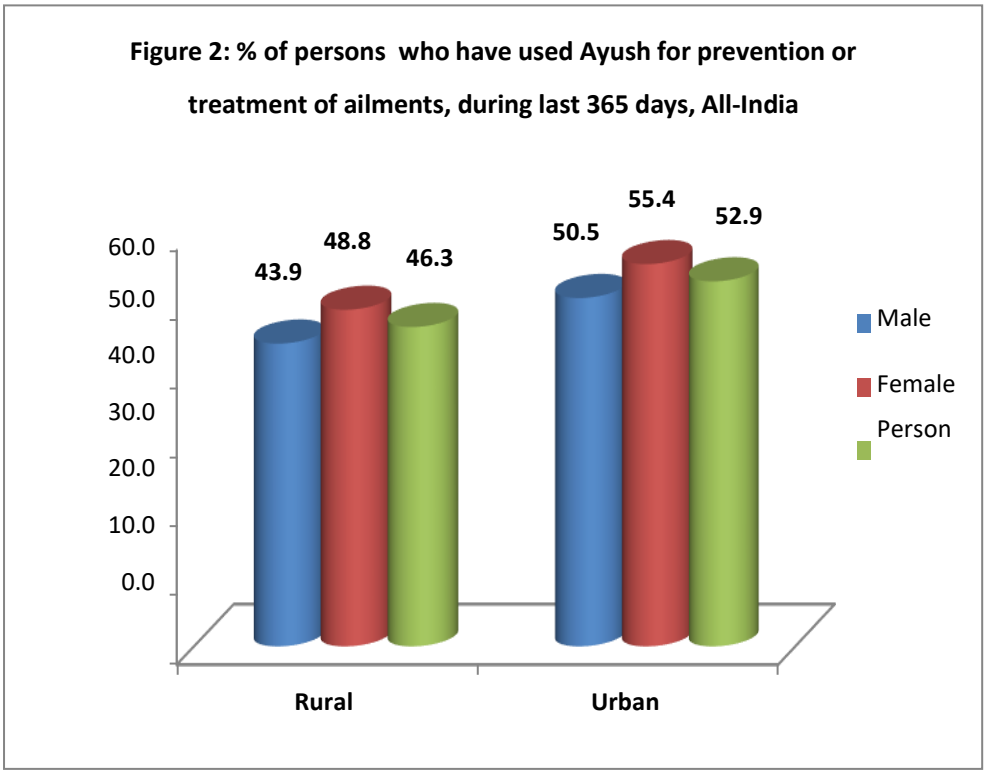

ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में रोग की रोकथाम एवं उपचार के लिए अन्य आयुष पद्धतियों की तुलना में आयुर्वेद को सर्वाधिक प्राथमिकता दी गई है।

सारणी 1: चिकित्सा पद्धति के अनुसार रोग की रोकथाम अथवा उपचार हेतु आयुष का उपयोग करने वाले लोगों का प्रतिशत		
चिकित्सा पद्धति	ग्रामीण	शहरी
आयुर्वेद	40.5	45.5
अन्य*	9.4	12.8
कोई	46.3	52.9
*इसमें योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा-रिग्पा और होम्योपैथी शामिल हैं		

यह है भी गया देखा गया कि आयुष का इस्तेमाल पुनर्यौवन अथवा रोकथाम हेतु अधिक किया गया है, उपचार तथा रोगनिदान हेतु कम।

3. आयुष उपचार पर होने वाला व्यय:

ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में पिछले 365 दिनों में रोग की रोकथाम अथवा उपचार हेतु आयुष पर किए

जाने वाले प्रति व्यक्ति औसत व्यय का अनुमान सारणी 2 में दिया गया है।

सारणी 2: आयुष पद्धति द्वारा रोग की रोकथाम अथवा उपचार पर किया जाने वाला प्रति व्यक्ति औसत व्यय (रु. में)		
चिकित्सा पद्धति	ग्रामीण	शहरी
आयुर्वेद	394	499
अन्य*	622	592
कोई	472	574
*इसमें योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा-रिग्पा और होम्योपैथी शामिल हैं		